खुद को बलवान बनाओं

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 24 जनवरी, 2009।

अणुव्रत अनुशास्ता राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा कि आदमी परिस्थिति के अनुसार चलता है। जब तक समाज है, दो व्यक्ति साथ है तब तक परिस्थितियों को समाप्त नहीं किया जा सकता। परिस्थिति को अनुकुल बनाने के लिए खुद को बलवान बनाना होगा।

उन्होंने तेरापंथ भवन में प्रवचन करते हुए कहा कि मन की साधना, प्रतिशंलिनता की साधना और मन को बलवान बनाने का अभ्यास हो तो आप स्वयं बलवान बन जायेंगे और परिस्थिति अनुकूल बन जायेगी। उन्होंने कहा कि हमारे जीवन में रंग का बहुत महत्त्व है। लाल रंग की बहुलता क्रोध को बढा देती है। शांति के लिए नीले रंग का प्रयोग करना चाहिए।

आचार्य महाप्रज्ञ ने इन्द्रियों एवं कषाय पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि लेश्या भावों का पैरामीटर है। लेश्या अशुद्ध होगी तो परिणाम अच्छा नहीं होगा। नकारात्मक विचार प्रभावित करेंगे। मन को बलवान बनाने के लिए लेश्या पर ध्यान दें।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि युवावस्था जीवन की सर्वश्रेष्ठ अवस्था होती है। जो इस अवस्था में शक्ति का सम्यक् उपयोग करता है। वह अपनी जवानी को सार्थक बना लेता है। उन्होंने कहा कि जब तक बीमारियां न बढे, बुढापा न आ जाए और इन्द्रियों की शक्ति क्षीण न हो जाये जब तक धर्म की साधना कर लें। उसके बाद आराधना करना कठिन हो जायेगा। उन्होंने साधु-साध्वियों को इंगित करते हुए कहा कि जिस धर्मसंघ में रहते हैं उसकी जितनी सेवा करते हैं उतनी कम हैं और वृद्धों की सेवा करें जिससे जवानी की सार्थकता होगी।

2010 का मर्यादा महोत्सव पड़िहारा में करने की अर्ज

कार्यक्रम में पड़िहारा से समागत संघ ने राष्ट्रसंत आचार्य श्री महाप्रज्ञ से 2010 का मर्यादा महोत्सव पड़िहारा में करने की भावपूर्ण अर्ज की। तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ कन्या मण्डल ने गीत की प्रस्तुति दी एवं भारत जैन महामण्डल के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष पन्नालाल सुराणा ने समाज की तरफ से जोरदार अर्ज पेश की। इस संघ में पड़िहारा के सभी जाति के लोग उपस्थित थे।